

Regarding need to build a `Dwar` (Gate) on Haryana-Delhi border in honour of Pandit Lakhmichand, a poet of Haryanvi language-Laid

श्री सतपाल ब्रह्मचारी (सोनीपत) : श्री पंडित लख्मीचंद जी, जिन्हें हरियाणा का 'सूर्य कवि' एवं 'हरियाणवी संस्कृति का जनक' माना जाता है, ने हरियाणा की लोक-संस्कृति, रागनी, किस्सागोई और सामाजिक चेतना को अपनी ओजस्वी वाणी के माध्यम से नई ऊंचाइयों तक पहुँचाया। उनका साहित्य आज भी जनमानस को दिशा देने का कार्य कर रहा है। ऐसे महान व्यक्तित्व की स्मृति में एक भव्य द्वार का निर्माण हरियाणा और दिल्ली की सीमा पर (जैसे सिंधु बॉर्डर, कुंडली, बहादुरगढ़ आदि क्षेत्र में) करवाया जाना अत्यंत आवश्यक है, जिससे आने वाली पीढ़ियाँ उनके योगदान से प्रेरणा प्राप्त कर सकें। यह स्थान हरियाणा और दिल्ली की जनता को सांस्कृतिक एकता, लोक परंपराओं और विरासत से जोड़ने का एक माध्यम बनेगा। सरकार से विनम्र अनुरोध है कि इस विषय में संज्ञान लेते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश जारी करने की कृपा करें।